TECHE UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4480**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

२

॥ दि० ॥ ढाल जोक्षणां री काछां मिनी बुनी पजरे लाल एदेसी ॥ धनेंर पेत्र वदह । हो रूपषकारी हो जीए
जी ॥ श्रपवीराजे होभाज भत्र रूपावृणोरे लाल । बाणी श्रमीय करेह । हो रूपषकारी हो निणजी
मानुपावस हीतनो बादल बरसणोरे लाल ॥ १ ॥ मीलीया सुर नर नारि । हो । देवुंगणा मिलगावेय
वलमनोहर रे लाल । नाटक रा झंकार । हो । केसर क्यारी हो पुलती हेरषस हो धरुरे लाल ॥ २ ॥
सिरपर छुत्र श्रसोष । हो । प्र दरूतनो रूपदायक बायजको लतोरे लाल । रूरतज श्राव देवलोक
हो । रूलमिथ्या मैम नृहीया नो भोलतोरे लाल । ३ । मोमन श्रधक उछाह । हो । बाणी रूधार सपीउदूर
क मरीही रेलाल । मेटु भवरदा हाहे । एमनोरथ सफल हो सी जेप जद जीतरे लाल ॥ ४ ॥ धनर ते
नर नार । हो । दरसण देषी हरषकरो नेव नरे रेलाल । नवनी धक्रमश्र पार । हो । तुमची श्राण
पुमाण करी श्री नमतीरवे लाल ॥ ५ ॥ जगत्पारण जिणराज हो । म्हारी विरीया श्रालससायब
किम करोरे लाल । राषो श्रविचल लाज । हो । दीनदयाल किरपाल नरो सो श्रपूरोरे लाल ॥ ६ ॥
हुतनवंद जी चरदास । हो । चरण समीपराषो तोमय फलीचो करीरे लाल । दीजो सिवपूर वास
हो । वद चेको रजु चाउ किरया श्रपरीरे लाल । ७ ॥ इति संपूर्ण ॥ ढाल नीहुर थयो देसी ॥ ए जगज 1
ले रूपनको माझा । इसमर का गाव जोणारे । घर गढ आवरत न हो पावे का राजा का यणारे ॥
ए १ करे मैकावराचमक बलार ॥ रूपरेषहर बालारे । सुंदर नार बडी रूपश्राले । सेवट बास
मसोलारे ए २ ॥ गाकी बसगार न श्रतीलीला बोलमगाज नराणरे । श्रंदरमपान एतोन ही मीच
श्रावर निकटैयै याणारे ए ३ । करर कपटनी पटधमेमे ल्यो । सेचर एक बाल रे । मदछकी योम
नमनही सोच । सेवट माले विराणरे । ए ४ । पोडरी वसकर मबकु बाध्या । करर नेक मणाणा
रे । पोरपा काल पोहुतो पर नव । घाली मदछावी काणरे । ए ५ । बिनूषत पुरम सीतल छाणा
जाणाघे वरपेट नराणरे । जगाइ मीद बुली दोय श्रषीया । श्रंत काणा काणारे । ए ६ । मुय

१

भरम भेल ह्यो स्क जग को ॥ सिर पर छत्र धरावणो रे । जा पेपो प क्ष छत्र की जायसा । मा गर ज्ञ बुवाणो
रे ।८७। रतनचंद जग देष ग्र थरता । नी जगुण मन ठेरावणो रे ॥ ग्र लब ली यो सत गुरु उपदेस । पु
दगल नरम मी टावणो रे ॥ ८ ॥ इति ढाल भोइरथयो देशी ॥ थारी कुलसी देह पल कभे पलट ॥
कामगारू डी राषेरे । स्रातम मन न स्र मी रस त जने । जहर जडी कुण वाषरे ॥ थारी ॥ १ ॥ कालब ली या
बसार लाग्यो । जुपीस जीमफा करे । जरा मे जारीछ लेकर बैठो । जु मकसायर ताकरे ॥ था ॥ २ ॥ मीरप
स्वागलगी कस बोड । तेब मीछीणेगा ना षेरे । नोरम नारयार की मला । छ वा विषकिम जा षेरे ॥
था ॥ ३ ॥ इन्द्र धनिक जु पल क भे पलट । देह षेह सम दा षरे । इण स्क मी हो करसी करस्यु । इम कहे
स्रामे सा षरे ॥ था ॥ ४ ॥ रतनचंद जग देष ड बरथा । फंदी य कर मनी पा करे । सी व्र स्क व नोर्ध दी योमो
म सतगुर । ती णस्क षरी न्र नी लाषारे था ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ढाल भोइरथयो देशी ॥ वोक जनम नीबलो
कोडे सं बट मनमा फरीयरे चेत चेतनरे चेतनर स्रातम कारज करीयरे हरवो ॥ १ ॥ करसी लागार नार
कमस्राल बेकर जोडी उ तारे वाषीपी इच टकरे चाले हाजी मीगड गाड सबबु वीरे हरवो ॥ २ ॥ चाक
चक फोल बोल जर षस की मोरु नमा लाग लमरे चक्र दीसभे कर ही कस बोड पण को फचल्या
पेक पलभेरे हरवो ॥ ३ ॥ रूपसरूप स्र नोमु म वो पम कंचन बरली कायारे हरषल नी रख नी रख
सु षपाष पण गो फचल्या पेक डीन मरे हरवो ॥ ४ ॥ लाष कोड री कड धन मेल्यो केर कर कपट कु
मा मैं छरे रात दी वस दोड धन कारण ते तो नु तमी गाडरे हरवो ॥ ५ ॥ करी या या नमुनरूत रूत
ना दीन दीन मास वधायोरे स्कस बरस पछमाण न कीधा काल स्र चाण क स्रायोरे हरवो ॥ ६ ॥
मोती कडा की लगी न युनडी सीस मकटन गजडी यारे चक्र विस कस टषड्ग दहे मोला तेहा
स्र चाण क पकडी यारे हरवो ॥ ७ ॥ रतनचंद स्रानंद स्क दरस पेन पिया ला नरी यारे स्रेडम बजडी
सु मरनी सेवा इणसे तीनीस तरी यारे हरवो ॥ ८ ॥ इति

१